International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-11-2025, Accepted: 11-12-2025, Published: 26-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 175-177

महात्मा गांधी की विचारधारा के निर्माण में अध्ययन एवं पठन–संस्कृति का योगदान

पल्लवी आनंद
शोधार्थी, हिंदी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
'महात्मा गांधी की विचारधारा के निर्माण में अध्ययन एवं पठन–संस्कृति का योगदान' विषय के अंतर्गत उनके विचारधारा के निर्माण में उपयुक्त पुस्तकों का विवरणात्मक अध्ययन किया गया है। किसी भी विचारधारा को समझने, किसी सिद्धांत की गहराई तक पहुँचने, समाज की संरचना का विश्लेषण करने अथवा किसी दृष्टिकोण का निर्माण करने के लिए अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। अध्ययन ही मनुष्य के विचारों को दिशा देता है, उसके चिंतन को व्यापक बनाता है तथा उसे आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। महात्मा गांधी इसका एक अत्यंत सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। गांधी का व्यक्तित्व अचानक निर्मित नहीं हुआ था, उनके निरंतर अध्ययन, आत्मचिंतन और विविध वैचारिक स्रोतों के संपर्क का परिणाम था। अपने जीवन के प्रारंभिक चरण से लेकर अंतिम समय तक गांधी निरंतर पठन–पाठन और अध्ययन से जुड़े रहे। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों, दार्शनिक विचारों, सामाजिक साहित्य तथा विभिन्न चिंतकों के लेखन का गंभीर अध्ययन किया। यही अध्ययन उनके व्यक्तित्व, विचारधारा और जीवन–दृष्टि के निर्माण का आधार बना। गांधी के अध्ययन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि वे केवल ज्ञान अर्जित करने के उद्देश्य से नहीं पढ़ते थे। वे जिन विचारों, सिद्धांतों और जीवन–मूल्यों को पढ़ते थे, उन्हें अपने जीवन में परखने और व्यवहार में उतारने का प्रयास भी करते थे।

मूल शब्द: महात्मा गांधी, विचारधारा,पठन संस्कृति, आत्मचिंतन, धार्मिक ग्रंथ, वैचारिक निर्माण

किसी भी महापुरुष की विचारधारा अथवा उसके सिद्धांत केवल उसके व्यक्तिगत अनुभवों का परिणाम नहीं होते अपितु उनके पीछे एक दीर्घ वैचारिक प्रक्रिया, गंभीर अध्ययन, निरंतर पठन–पाठन तथा सामाजिक और दार्शनिक संवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी विचारधारा को समझने, किसी सिद्धांत की गहराई तक पहुँचने, समाज की संरचना का विश्लेषण करने अथवा किसी दृष्टिकोण का निर्माण करने के लिए अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। अध्ययन ही मनुष्य के विचारों को दिशा देता है, उसके चिंतन को व्यापक बनाता है तथा उसे आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। महात्मा गांधी इसका एक अत्यंत सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। गांधी का व्यक्तित्व अचानक निर्मित नहीं हुआ था, उनके निरंतर अध्ययन, आत्मचिंतन और विविध वैचारिक स्रोतों के संपर्क का परिणाम था। अपने जीवन के प्रारंभिक चरण से लेकर अंतिम समय तक गांधी निरंतर पठन–पाठन और अध्ययन से जुड़े रहे। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों, दार्शनिक विचारों, सामाजिक साहित्य तथा विभिन्न चिंतकों के लेखन का गंभीर अध्ययन किया। यही अध्ययन उनके व्यक्तित्व, विचारधारा और जीवन–दृष्टि के निर्माण का आधार बना। गांधी के अध्ययन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि वे केवल ज्ञान अर्जित करने के उद्देश्य से नहीं पढ़ते थे। वे जिन विचारों, सिद्धांतों और जीवन–मूल्यों को पढ़ते थे, उन्हें अपने जीवन में परखने और व्यवहार में उतारने का प्रयास भी करते थे। उन्होंने किसी भी विचार को अंधानुकरण के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसे अपने अनुभव, सामाजिक परिस्थितियों और मानवीय मूल्यों की कसौटी पर परखा। जो विचार उन्हें समाज और मानवता के हित में उचित प्रतीत हुए, उन्हें उन्होंने अपने जीवन और आंदोलनों का आधार बनाया, तथा जो बातें उन्हें अनुपयुक्त लगीं, उन्हें स्वीकार नहीं किया। इसी कारण गांधी की विचारधारा स्थिर और जड़ न होकर निरंतर विकसित होने वाली तथा प्रयोगधर्मी दिखाई देती है। उनके चिंतन में गतिशीलता, आत्मसंशोधन और परिवर्तनशीलता स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है। गांधी का व्यक्तित्व इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि अध्ययन केवल बौद्धिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि आत्मनिर्माण का माध्यम भी है। महात्मा गांधी जन्म से 'महात्मा' नहीं थे, वरन् उन्होंने निरंतर अध्ययन, आत्ममंथन, प्रयोग और जीवनानुभवों के माध्यम से स्वयं को उस स्तर तक विकसित किया, जहाँ समाज ने उन्हें 'महात्मा' के रूप में स्वीकार किया।

गांधीजी का जन्म वैष्णव परिवार में हुआ (1869) उनके अंदर उनके पिताजी के गुण के साथ–साथ उनकी माताजी के भी गुण विद्यमान थे। बाल्यावस्था में उन्होंने अपने पिताजी (कबा गांधी) द्वारा खरीदी हुई पुस्तक को पढ़ते है जिसका नाम है 'श्रवण–पितृ–भक्ति' नाटक इस पुस्तक को गांधीजी बड़े चाव से पढ़ जाते है। "उन दिनों काठ के बक्से में शीशे से चित्र दिखाने वाले भी दरवाजे दरवाजे फिरा करते थे। उनसे मैंने श्रवण के अपने माता–पिता को कांवर में बिठाकर यात्रा के लिए ले जाने का चित्र भी देखा। दोनों चीजों का मुझ पर गहरा असर पड़ा। मुझे भी श्रवण के समान होना चाहिए, यह भाव मन में उठने लगा। श्रवण की मृत्यु पर उसके माता–पिता का विलाप आज भी याद है।" इस पुस्तक ने उनके अंदर माता–पिता के प्रति सम्मान भाव को उजागर किया। वही दूसरी ओर उन्होंने एक नाटक देखा 'हरिश्चंद्र की कथा' इस नाटक को देखने के पश्चात उनके अंदर सत्य के प्रति आदर्श भाव परिलक्षित हुए। "यह नाटक देखने से मेरी तृप्ति ही न होती थी। उसे बार–बार देखने को जी चाहता; पर बार–बार जाने कौन देता? किंतु मन में इस नाटक को सैकड़ों बार दोहराया होगा। हरिश्चंद्र के सपने आया करते। "हरिश्चंद्र–जैसे सत्यवादी सब क्यों नहीं हो जाते?" यह धुन रहती। हरिश्चंद्र जैसी विपत्तियां पड़ी थीं वैसी विपत्तियों को भोगना और सत्य का पालन करना ही... वास्तविक सत्य है। मैंने तो मान लिया था कि नाटक में लिखी विपदाएं हरिश्चंद्र पर अवश्य पड़ी होंगी। हरिश्चंद्र का दुःख देखकर, उसे याद कर, मैं खूब रोया हूं। आज मेरी बुद्धि' समझती है कि हरिश्चंद्र कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं थे। फिर भी मेरे मन में हरिश्चंद्र और श्रवण आज भी जीवित हैं। मेरा खयाल है कि मैं आज इन नाटकों को पढ़ूँ तो आज भी मुझे आसू आ जायेंगे।"

इसी पठन–पाठन एवं अध्ययन के दौरान धर्म की झांकी में उन्हें रामायण ग्रंथ के प्रति गहन आदर्श भाव उत्पन्न हुए अपनी आत्मकथा में गांधीजी ने इस बात को स्पष्ट किया है कि उनके मन पर गहरा असर पड़ा वो था रामायण का पारायण। बचपन में

भूत–प्रेत के डर से बचने के लिए रंभाबाई ने 'रामनाम' रूपी दवाई बताई। जिसे गांधीजी ने जीवन पर्यंत अपनी शक्ति के रूप में रखा। "मेरी अवस्था इस समय कोई तेरह साल की रही होगी, पर यह याद है कि मुझे उनकी कथा में खूब रस मिलता था। यह रामायण–श्रवण रामायण पर मेरे आत्यंतिक प्रेम की बुनियाद है। मैं आज तुलसीदास की रामायण को भक्तिमार्ग का सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूं।" इस रामनाम को उन्होंने अंतिम दिनों तक अपने साथ रखे इसका प्रमाण है उनके अंतिम समय में उन्होंने आखिरी शब्द 'हे राम' ही थे।

गांधीजी के विलायत प्रवास के दौरान उनकी माँ (पुतलीबाई) ने उनसे प्रतिज्ञा दिलवाई जिसमें मांस, मदिरा, और स्त्री–संग से दूरी बनाए रखने की बात थी। जिसे गांधीजी ने जीवनभर पालन किया इसी प्रतिज्ञा में मांस से दूरी की बात कही गई है जिसे गांधीजी ने विलायत में पालन भी करते है एवं प्रचार–प्रसार भी करते है अन्नाहार के प्रति उनकी श्रद्धा दिन–प्रति दिन बढ़ती चली जाती है जिसके लिए वे अन्नाहार से संबंधित कई पुस्तकों का अध्ययन भी करते है जो कि इस प्रकार से है साल्ट की 'अन्नाहार की हिमायत', हार्वर्ड विलियम्स की आहारनीति, डॉ. श्रीमती अना किंग्सफर्ड की उत्तम आहार की रीति, डॉ. ऐलिन्सन के आरोग्य– विषयक लेखों। "डॉक्टर एलिन्सन स्वयं अन्नाहारी थे और रोगियों के लिए केवल अन्नाहार की ही सलाह देते थे। इन सारी पुस्तकों के पढ़ने का परिणाम यह हुआ कि मेरे जीवन में भोजन के प्रयोगों ने महत्त्वपूर्ण स्थान ने लिया। उन प्रयोगों में पहले आरोग्य–दृष्टि की प्रधानता थी, बाद को धार्मिक दृष्टि सर्वोपरि हो गई।" गांधीजी का मानना था स्वाद का वास्तविक स्थान जीभ नहीं, मन है।

इसी दौरान गांधीजी का परिचय भागवतगीता नामक अमूल्य ग्रंथ से होता है। एडविन आर्नल्ड का अनुवादित गीता गांधीजी को सबसे ज्यादा अच्छी लगी थी।

"ध्यायतो विषयान्पंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामःकामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

इन श्लोकों का मेरे मन पर गहरा असर पड़ा। उनकी ध्वनि मेरे कानों में गूंजती ही रहती। भगवद्गीता अमूल्य ग्रंथ है, यह मुझे उस समय प्रतीत हुआ। वह मान्यता धीरे–धीरे बढ़ती गई और आज मैं तत्त्वज्ञान के लिए उसे सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूं। निराशा के समयों में उस ग्रंथ ने मेरी अमूल्य सहायता की है। उसके अंग्रेजी अनुवाद लगभग सब पढ़ गया हूं, पर एडविन आर्नल्डो का अनुवाद मुझे सबसे अच्छा लगता है। मूल ग्रंथ के भावों की रक्षा भी की गई है, फिर भी वह ग्रंथ उलथा–जैसा नहीं लगता। उस समय का यह वाचन मेरा गीता अभ्यास करना नहीं कहला सकता। मेरे नित्यवाचन का ग्रंथ तो वह कई बरस बाद हुआ।"

एडविन आर्नल्ड का बुद्ध–चरित (लाइट ऑफ एशिया)को वे गीता को पढ़ने के बाद पढ़ते हैं और अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि "अब तक तो सर एडविन आर्नल्ड के गीता के अनुवाद का ही मुझे पता था। बुद्ध–चरित को मैंने गीता की अपेक्षा भी अधिक चाव से पढ़ा। पुस्तक हाथ में लेने के बाद पूरी करके ही रख सका।"

इसी दौरान उन्होंने मैडम ब्लैवट्स्की की पुस्तक 'की टू थियासोफी' (थियासोफी की कुंजी) पढ़ी। इसी पुस्तक के बाद उन्हें हिन्दू धर्म की पुस्तकें पढ़ने की इच्छा हुई।

बाइबल, नये इकरार, ईसा के 'गिरी–प्रवचन' का उनके ऊपर बहुत अच्छा प्रभाव हुआ। "बुद्धि ने गीता के साथ उसकी तुलना की "जो तेरा कुर्ता मांगे उसे अंगरखा भी दे दे, जो तेरे दाहिने गाल पर तमाचा मारे, बायां गाल भी उसके सामने कर दे", यह पढ़कर मुझे अपार आनन्द हुआ। श्यामलभट्ट का छप्पय याद आया। मेरे बालक मन ने गीता, आर्नल्ड कृत बुद्धचरित और ईसा के वचनों का एकीकरण किया। त्याग में धर्म है, यह बात मन को रुचि।" इन्ही आदर्शों एवं विचारों को उन्होंने अपने जीवन के सभी कार्यों में लगाया।

इसी प्रकार गांधीजी को अन्य धर्माचार्यों के जीवन–वृत पढ़ने की इच्छा हुई इसी क्रम में उन्होंने कार्लाइल की 'विभूतियां और विभूतिपूजा' का अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पैगंबर साहब के बारे में पढ़ा जिससे उन्हें उनकी महत्ता, वीरता का पता चला। अनंतर उन्होंने खुद से वादा किया कि "मेरे मन में गांठ बंधी कि मुझे धर्म– पुस्तकें पढ़नी हैं और सब मुख्य धर्मों का उचित परिचय प्राप्त कर लेना है।"

महात्मा गांधी ने नास्तिकता के बारे में गहन अध्ययन किया जिसके लिए उन्होंने ब्रेडला की पुस्तक के साथ–साथ मिसेज बेसेंट की पुस्तक 'मैं थियासोफिस्ट कैसे बनी?' पुस्तिका को पढ़ लिया। इसी अध्ययन ने गाँधीजी को नास्तिकतावाद की ओर उदासीन बना दिया। 'के और मैलेसन', लेवेटर की पुस्तकों का भी उन्होंने अध्ययन किया।

उनके जीवन के महत्वपूर्ण पुस्तकों एवं लेखक में से एक पुस्तक टोल्सटाय की पुस्तक 'बैकुंठ तेरे हृदय में है', 'गारचेल्स इन ब्रीफ़', ^what to do*। "टोल्सटाय की 'बैकुंठ तेरे हृदय में है' ('द किंगडम ऑव गोड इज़ विदिन यू') नामक पुस्तक ने मुझे मोह लिया। उसका मुझ पर बहुत गहरा असर पड़ा। इस पुस्तक की स्वतंत्र विचार शैली, उसकी प्रौढ़नीति और उसके सत्य के सामने मि. कोट्स की दी हुई सब पुस्तकें शुष्क लगीं।"

टोल्सटाय के साथ–साथ गांधीजी रस्किन की रचनाओं से भी प्रभावित थे उन्होंने उनके द्वारा रचित 'अनटु दिस लास्ट' पुस्तक का अध्ययन किया। "पोलक तो मेरी सब बातें जान ही गये थे। मुझे स्टेशन पहुंचाने आये और एक किताब मेरे हाथ में देकर बोले–"यह किताब रास्ते में पढ़ने लायक है, पढ़ जाइयेगा। आपको पसन्द आयेगी।" पुस्तक का नाम था–' अनटु दिस लास्ट'। रस्किन की किताब थी। इस पुस्तक को हाथ में लेकर मैं छोड़ ही न सका। उसने मुझे पकड़ लिया। जोहान्सबर्ग से नेटाल तक चौबीस घंटे का रास्ता था। ट्रेन शाम को डरबन पहुंचती थी। पहुंचने के बाद सारी रात नींद नहीं आई। पुस्तक में प्रकट किये हुए विचारों को अमल में लाने का इरादा किया। इसके पहले रस्किन की एक भी पुस्तक मैंने नहीं पढ़ी थी। विद्याभ्यास के दिनों में पाठ्य पुस्तकों के अलावा मेरी दूसरी बाहरी पढ़ाई नहीं के बराबर ही समझनी चाहिए। कर्मभूमि में प्रवेश करने के बाद वक्त बहुत कम बचता है। अतः आज तक भी, कहा जा सकता है, कि मेरा पुस्तकीय ज्ञान बहुत ही थोड़ा है। मैं मानता हूं कि इस अनायास या विवश होकर किये गए संयम से मुझे नुकसान नहीं हुआ। पर यह कह सकता हूं कि जो थोड़ी किताबें मैंने पढ़ी हैं उनको ठीक तरह से पचा सका हूं। इन पुस्तकों में से जिसने मेरे जीवन में तत्काल महत्त्व का रचनात्मक परिवर्तन करा दिया हो वैसी तो यही पुस्तक कही जायेगी बाद को मैंने उसका उलथा किया और वह 'सर्वोदय" के नाम से छपा है।"

गांधीजी सीखने और ज्ञान–अर्जन के प्रति काफी ईमानदार थे जिसके तहत उन्होंने लगातार अपना अध्ययन जारी रखा 1893 के दौरान उन्होंने काफी पुस्तकों का अध्ययन किया जो कि इस प्रकार से है, डॉ. पारकर की 'कमेंटरी', पियर्सन का 'मेनी इनफालिबल प्रूफ़स', बटलर की 'एनॅालोजी' आदि।

बटलर की पुस्तक एनॅालोजी के संदर्भ में महात्मा गांधी लिखते हैं कि "बटलर की श्एनॉलोजीश बहुत गम्भीर और कठिन किताब जान पड़ी। उसे पांच–सात बार पढ़ना चाहिए। वह नास्तिक को आस्तिक बनाने के लिए लिखी हुई जान पड़ी। उसमें ईश्वर के अस्तित्व के बारे में दी गई दलीलों का. मेरे लिए कोई उपयोग न था; क्योंकि यह मेरा नास्तिकता का काल नहीं था। पर जो

दलीलें ईसा के एकमात्र अवतार और मनुष्य और ईश्वर के बीच में मध्यस्थता करने वाला होने के विषय में दी गई थीं, उनकी छाप मुझ पर न पड़ी।"

सेलका कुरान (टीका) पुस्तक के अध्ययन के साथ–साथ उन्होंने इस्लाम संबंधित अन्य पुस्तकों का भी अध्ययन किया। गांधीजी लगातार अपने पठन–पाठन में नयी पुस्तकों एवं विचारों को जोड़ते चले गए उन्होंने अपने द्वारा दिए गए सिद्धांत का गंभीर अध्ययन, आत्मपरीक्षण और व्यवहारिक परीक्षण किया करते थे। यही कारण है कि उनके सिद्धांत केवल वैचारिक घोषणाएं नहीं रहे अपितु अनुभूत और प्रयोगधर्मी जीवन–दृष्टि के रूप में सामने हैं।

उपरोक्त पुस्तकों के अलावा पंचीकरण, मणिरत्नमाला, योगवासिष्टका, हरिभद्र सुरिका, नर्मदाशंकर की 'धर्म–विचार', मैक्समूलर की 'भारत क्या सीखाता है?' आदि उल्लेखनीय है।

गांधीजी द्वारा किये गए आंदोलन का केंद्र भाव इन्ही पुस्तकों के विचारों एवं आदर्शों के माध्यम से प्राप्त हुआ था। कौमी एकता, शराबबंदी, खादी, गाँव की सफाई, बुनियादी तालीम, स्त्रियों का उद्धार, राष्ट्रभाषा, किसान, मजदूर, आदिवासी विद्यार्थी आदि विचारधाराओं का गठन इन्ही लगातार अध्ययन एवं पठन–पाठन के कारण संभव हो पाया है। "गांधी एक हिंदू के रूप में पैदा हुए और पले–बढ़े थे और आजीवन उन्होंने इस सांप्रदायिक पहचान को दृढ़ता से स्वीकार किया। लेकिन यह भी सच है कि ना उनके पहले और बाद में किसी हिंदू ने इब्राहीमी धर्मों (ईसाई, इस्लाम और यहूदी) के साथ इतना नज़दीकी संबंध रखा। उन्होंने यहूदी धर्म को व्यक्तिगत दृष्टिकोण से समझा–खासतौर पर अपने मित्रों पोलक, कालेनबाख और सोन्जा 'लेज़िन के ज़रिए । ईसाई धर्म में उनकी रुचि निजी और आध्यात्मिक दोनों थी–वो डोक और एंड्रयूज़ को पसंद करते थे, लेकिन जहां वो यहूदी विचारों से प्रभावित नहीं दिखते थे, वहीं उनकी विचारधारा पर विविध विचारों वाले गैर–रुढ़िवादी ईसाई साहित्य का गहरा प्रभाव दिखता था–सबसे ज़्यादा टॉल्सटॉय की 'द किंगडम ऑफ गॉड इज़ विदीन यू' का। इस्लाम के साथ उनके संबंध कुछ हद तक निजी थे, लेकिन ज़्यादातर तथ्यात्मक और राजनीतिक। उन्होंने कुरान पढ़ा था (एकाधिक बार) लेकिन इसका उन पर उस तरह का प्रभाव नहीं पड़ा था, जैसा 'गीता' या 'सरमन ऑन द माउंट' का पड़ा था। उनके कुछ मुस्लिम मित्र थे, लेकिन उनकी कहीं ज़्यादा दिलचस्पी हिंदुओं और मुस्लिमों के बीच सहमति विकसित करने में थी ये दोनों समुदाय दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों में और भारत में प्रमुख थे।"

महात्मा गांधी ने विभिन्न पुस्तकों एवं लेखकों की लेखनी से प्रभावित होकर अपनी विचारधारा का घटन किया जिसमें उनके जीवन भर के ज्ञान का निचोड़ सम्मिलित था। जैसे कि भगवतगीता से उन्होंने निष्काम कर्म, आत्मसंयम एवं कर्तव्यबोध की प्रेरणा मिली वही दूसरी ओर बाइबल के अध्ययन से उन्होंने अहिंसा और क्षमा का भाव विकसित हुआ। कुरान से धार्मिक सहिष्णुता एवं मानवता समानता के भाव को उद्धारित किया। रस्किन के अनटु दिस लास्ट से उन्होंने श्रम की गरिमा, समानता और सामूहिक कल्याण की अवधारणा से प्रेरित हुए। टोल्स्टॉय की रचना से उन्होंने प्रेम, अहिंसा, नैतिक प्रतिरोध के सिद्धांत की प्रेरणा मिली। लाइट ऑफ एशिया पुस्तक के माध्यम से गांधीजी ने गौतम बुद्ध के जीवन और करुणा के सिद्धांत का प्रभाव पड़ा। गांधीजी मूल रूप से जैन, बौद्ध और वैष्णव संप्रदाय से प्रभावित थे। उनके अंदर हिन्दू, इस्लाम, ईसाई और अन्य धर्मो के अध्ययन से निर्मित दृष्टि परिलक्षित होती दिखाई देती थी।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी की विचारधारा के निर्माण में अध्ययन एवं पठन संस्कृति का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण, व्यापक और निर्णायक रहा। गांधीजी का व्यक्तित्व इस बात का प्रमाण है कि पुस्तकों और विचारों के गंभीर अध्ययन से न केवल व्यक्ति का चिंतन विकसित होता है वरन् वह समाज और राष्ट्र के लिए भी परिवर्तनकारी दिशा प्रदान कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. गांधी,महात्मा.(2020).सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा. दिल्ली:सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन. पृ. 13.
2. वही, पृष्ट– 13–14
3. वही, पृष्ट– 29
4. वही, पृष्ट– 40
5. वही, पृष्ट– 52–53
6. वही, पृष्ट– 53
7. वही, पृष्ट– 54
8. वही, पृष्ट– 54
9. वही, पृष्ट– 96
10. वही, पृष्ट– 196
11. वही, पृष्ट– 87
12. गुहा, रामचन्द्र. (2015). गांधी भारत से पहले. हरियाणा: पेंगुइन रैडम हाउस इंडिया. पृष्ट – 581